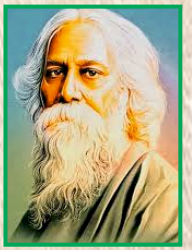

जीवनपथ हिन्दी

₹ 10/-

JEEVANPATH HINDI

Vol. No. 14, Issue No. 9 (₹ १०/- प्रचार के लिए) Mumbai, 15th April 2026
Website : www.jeevanjyot.in Total 36 Pages E-mail : jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।

श्री जलाराम अन्नदान क्षेत्र... जय श्री जलाराम बापा'
समाज के लोकहित की भावना में पूर्ण रूप से गैरव्यावसायिक
मुखपत्र जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट की भेंट

तस्वीर बोल रही हैं मानवता की

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट बाल कैंसरग्रस्त मरीज़ों के जीवन में खुशी और आनंद लाने के लिए मनोरंजन के कार्यों में योगदान देने वाले दानदाताओं का तहे दिल से आभार व्यक्त करता है। संस्था के संस्थापक और मैनेजिंग ट्रस्टी श्री हरखचंदभाई सावला (बाडावाला) बच्चों को पिकनीक की तैयारी करते हुए दृष्टिमान हो रहे है।

गरीब, निराधार कर्करोगग्रस्त मरीजों को अन्नक्षेत्र में, जीवदया में और टॉयबैंक में अनुदान देने वाले और इस अंक के सौजन्यदाता

श्रीमती प्रीतीजी निमेष शाह (सायन)

तस्वीर बोल रही हैं जीवन ज्योत वृद्धाश्रम की

जीवन ज्योत वृद्धाश्रम में बुजुर्ग लोगों को
ऐसी गतिविधियों में व्यस्त रखा जा रहा है ।

तस्वीर बोल रही हैं अनाज वितरण की

कैंसरग्रस्त मरीजों के परिवार शारीरिक, आर्थिक और मानसिक रूप से तबाह हो जाते हैं। उनका मनोबल बनाए रखने के लिए, आर्थिक रूप से कमजोर 150 परिवारों को हर माँह अनाज दिया जाता है।

विशेष सूचना : यह पुस्तिका आपको सप्रेम भेंट के रूप में भेजी है । इस पुस्तिका को आप अपने मित्र-परिवार को पढ़ने के लिए दीजिए, ताकि उनसे कॅन्सर पीड़ित रोगियों को आपके अनुदान व सहयोग का कवच मिल सके । आपकी इस सेवा के लिए हम आपके चिरकाल तक ऋणी रहेंगे ।

स्थापना : १९८३

जीवनपथ

पथदर्शक : श्री खेतशी मालशी सावला

मार्गदर्शक : श्री बुद्धिचंद मारू

मुद्रक/स्थापक/प्रकाशक : हरखचंद सावला

संपादक : चन्द्रा शरद दवे

सह संपादक : आशा दसोंदी

–: शाखा कार्यालय :–

कोलकता कार्यालय

विनेश शेठ (गोपाल), ५, तल मजला,
खीरु प्लेस, कोलकता- ७०० ०७२. टे.: २२१७७८३४

जलगांव कार्यालय

शाह राघवजी लालजी सतरा (गुंदाला)
१०९, पोलनपेथ, जलगांव- ४२५००१
दूरध्वनि:०२५७-२२२४१५६ मो: ०९६७३३६४२९०

सांगली – कोल्हापुर

मीना जेठालाल मारू (हालापर)
मो. ७७०९९००४३३

नालासोपारा कार्यालय

१२, लक्ष्मी शोपिंग सेन्टर, राधा-कृष्णा होटेल
के बाजु में, तुलींज रोड,
नालासोपारा (ईस्ट)
खूश्बु गाला - मो. ८९२८७६५३०१

(कायदाकीय अधिकार क्षेत्र मुंबई रहेगा)

–: मुख्य कार्यालय :–

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

५/६ कोंडाजी चाल, जेरबाई वाडिया रोड,
टाटा हॉस्पिटल के पास, पेट्रोल पंप के सामने, परेल,
मुंबई-१२. मो.: ९८६९२०६४००/९०७६१६९३५५

इस पुष्प की पंखुडियाँ

सम्पादक की लेखनी से...	४
भजन - बाबा कृपा करो	७
व्यक्ति विशेष - सर्जेई ब्रिन और लैरी पेज	९
चिराग तले अंधेरा	११
पथ के दावेदार	१३
हिंसा के मुख में अहिंसा	१९
काव्य	२१
देर हो अन्धेर नहीं	२२
अच्छे कर्म	२७
ई. श्रीधरन - 'निर्माण पुरुष'	२८
बच्चों के रोग	२९
वर्दी	३०
सब कुछ आपके अंदर ही है	३२
दृढ निश्चय और देश प्रेम	३३
हास्य का हसगुल्ला	३४

अंक में दिए गए उपचार और सलाह का उपयोग अनुभवी की सलाह लेकर ही करें ।

अब वेबसाइट पर "जीवनपथ" पढ़ सकते हैं
www.jeevanjyot.in

ट्रस्ट रजि. नं. P.T.R.E.-17259 (M) - F.C.R.A. 083780700

❂ TI.T. EXEMPTION, DIT (E), MC/8E/80G/53(2009-11)

❂ CSR Registration No. CSR 00002659 ❂ **Email :** jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ अरिहंते नमो नम:
संसार के प्रत्येक जीव का हर क्षण मंगलमय हो।

संपादक की लघु लेखनी से...

प्रिय मान्यवर पाठको,

पांच गठरियां

एक महात्मा कहीं जा रहे थे। रास्ते में वो आराम करने के लिये रुके। एक पेड के नीचे लेट कर सो गये । नींद में उन्होंने एक स्वप्न देखा कि, वे रास्ते में जा रहे हैं और उन्हें एक व्यापारी मिला, जो पांच गधों पर बड़ी-बड़ी गठरियां लादे हुए जा रहा था। गठरियां बहुत भारी थीं, जिसे गधे बड़ी मुश्किल से ढो पा रहे थे। साधु ने व्यापारी से प्रश्न किया- इन गठरियों में तुमने ऐसी कौन-सी चीजें रखी हैं, जिन्हें ये बेचारे गधे ढो नहीं पा रहे हैं?

व्यापारी ने जवाब दिया- इनमें इंसान के इस्तेमाल की चीजें भरी हैं। उन्हें बेचने मैं बाजार जा रहा हूं। साधु ने पूछा- अच्छा! कौन-कौन सी चीजें हैं, जरा मैं भी तो जानूं!

व्यापारी ने कहा- यह जो पहला गधा आप देख रहे हैं इस पर अत्याचार की गठरी लदी है।

साधु ने पूछा- भला अत्याचार कौन खरीदेगा?

व्यापारी ने कहा- इसके खरीदार हैं राजा- महाराजा और सत्ताधारी लोग। काफी ऊंची दर पर बिक्री होती है इसकी।

साधु ने पूछा- इस दूसरी गठरी में क्या है? व्यापारी बोला- यह गठरी अहंकार से लबालब भरी है और इसके खरीदार हैं पंडित और विद्वान।

तीसरे गधे पर ईर्ष्या की गठरी लदी है और इसके ग्राहक हैं वे धनवान लोग, जो एक दूसरे की प्रगति को बर्दाश्त नहीं कर पाते। इसे खरीदने के लिए तो लोगों का तांता लगा रहता है।

साधु ने पूछा- अच्छा! चौथी गठरी में क्या है भाई?

व्यापारी ने कहा- इसमें बेईमानी भरी है और इसके ग्राहक हैं वे कारोबारी, जो बाजार में धोखे से की गई बिक्री से काफी फायदा उठाते हैं। इसलिए बाजार में इसके भी खरीदार तैयार खड़े हैं। साधु ने पूछा- अंतिम गधे पर क्या लदा है?

व्यापारी ने जवाब दिया- इस गधे पर छल-कपट से भरी गठरी रखी है और इसकी मांग उन औरतों में बहुत ज्यादा है जिनके पास घर में कोई काम-धंधा नहीं हैं और जो छल-कपट का सहारा लेकर दूसरों की लकीर छोटी कर अपनी लकीर बड़ी करने की कोशिश करती रहती हैं। वे ही इसकी खरीदार हैं। तभी महात्मा की नींद खुल गई।

इस सपने में उनके कई प्रश्नों का उत्तर उन्हें मिल गया। सही अर्थों में कहें तो वह व्यापारी स्वयं शैतान था, जो संसार में बुराइयाँ फैला रहा था। और उसके शिकार कमजोर मानसिकता के स्वार्थी लोग बनते हैं। शैतान का शिकार बनने से बचने का एक ही उपाय है कि ईश्वर पर सच्ची आस्था रखते हुए अपने मन को ईश्वर का मंदिर बनाने का प्रयास करें..!! ■

-: दानवीर दाताओं के लिए विशेष सूचना :-

दानवीर दाताओं द्वारा जीवन ज्योत संस्था के बैंक खाते में दान करने के बाद, जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय पर ईमेल : jeevan_jyot@yahoo.in या वॉट्सअप नं. ९८६९२०६४०० पर अपना नाम, पत्ता, पॅनकार्ड नं. और दान कोर्पस या सामान्य में हैं यह जानकारी दे ।

बैंक का नाम / IFSC नं.	खाता नं.	ब्रांच
बैंक ऑफ महाराष्ट्र MAHB0000563	20059826756	परेल (भोईवाडा)

संस्था के अनेक समाजसेवी प्रकल्पों में से कुछ प्रकल्प दाताओं के नाम पर कार्यान्वित हैं

१) श्रीमती नलिनीबेन बिपीनचंद्र मेहता : कैंसर डिटेकशन सेन्टर
२) श्रीमती चंपाबेन झुमखराम शाह : कोलोस्टोमी बैग सेन्टर
३) श्रीमती साकरबेन एल. डी. शाह (बिदड़ा) : जलाराम अन्नदान क्षेत्र
४) श्रीमती पुष्पावंती किशोरभाई भोजराज (मेराउ) : ऐम्ब्युलन्स् सेवा
५) श्रीमती नयनाबेन बिपीनभाई दाणी : वरिष्ठ नागरिक आइकार्ड सेवा
६) श्रीमान महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा) : ब्लैक मोलाइसीस दवा
७) श्रीमान डुंगरशीभाई मुलजी मारू (काराघोघा) : आधुनिक उपकरण.
८) कु. साईशा - नाईशा दाणी : टॉय बैंक
९) मातुश्री खेतबाई देवराज मारु (हालापुर) : चेरी. डिस्पेन्सरी
१०) मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा) : जीवदया
११) मातुश्री चंद्राबेन जयंतिलाल चत्रभुज मोदी : हल्दी दूध योजना
और मातुश्री लाछबाई हीरजी करमशी भेदा (समाघोघा)
१२) श्री हरीराम माथुराम अग्रवाल (चेम्बुर) : फल वितरण
१३) मातुश्री सुशीलाबेन कांतिलाल दाणी (हरसोल) : एनिमल ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१४) मातुश्री ललिताबेन बिहारीलाल शाह (सांताक्रुझ) : ओजोन थेरेपी सेन्टर
१५) मातुश्री ताराबेन जयंतिलाल वाघाणी (माटुंगा) : जीवन ज्योत ड्रग बैंक
१६) देविका सोमचंद लालका (अमलनेर)
(स्व. कु. हंसाबेन रतनशी लोडाया) : कॉम्पिटिशन् योजना
१७) मयुरभाई महेता और जितेन्द्र पारेख : ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१८) मातुश्री इन्दुमति महेन्द्र गांधी (लिंबोद्रा-बोरीवली) : पेथोलोजी सेन्टर
१९) श्रीमती मंजुलाबेन नटवरलाल शाह (हरसोल) : ब्लड बैंक
२०) श्रीमान नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल) : मेडिकल कैम्प
२१) श्रीमती नलिनीबेन रसीकभाई जादवजी शाह : ऐम्ब्युलन्स् सेवा
२२) स्व. श्री इन्दरचंद लख्खीचंद खींवसरा (धुलिया) : पस्ती योजना
२३) डॉ. रमेश मंत्री : अनाज वितरण
२४) श्रीमती उषाबेन मणिलाल गाला (कांडागरा-गोरेगाम) : जलाराम अन्नक्षेत्र
२५) श्रीमती साकरबेन प्रेमजी चेरीटेबल ट्रस्ट (वर्ली) : केमोथेरेपी विभाग

भजन

बाबा कृपा करो

(तर्ज : परदेसी परदेसी)

श्याम बाबा, श्याम-बाबा कृपा करो,
इस दास पर, इस दास पर।
श्याम प्यारेऽऽऽ, दास पुकारे,
भक्तों की नैया बाबा तेरे सहारे ।।

मोह-माया के जाल में ऐसे जकड़े हैं-जकड़े हैं।
काम, क्रोध, मद, लोभ के पाए पकड़े हैं।
कैसे निकले बाहर रास्ता भूल गए, भूल गए।
फन्दों ही फन्दों में हम तो झूल गए।
श्याम प्यारे दास पुकारे...

हम गलती पर गलती भगवन करते हैं-करते हैं।
लेकिन फिर भी प्रेम तुम्हीं से करते हैं।
ज्ञान-दीप पर अंधियारों के डेरे हैं, डेरे हैं।
काले-काले बादल हमको घेरे हैं।
श्याम प्यारे दास पुकारे...

तेरी दया से तेरी ज्योत जगाई है-जगाई है।
पूर्व जन्म की पूंजी सामने आई है।
ऐसा वर दे श्याम तेरे गुण गाएं हम, गाएं हम।
भक्त पुकारे मंजिल श्री चरणों की पाएं हम।
श्याम प्यारे दास पुकारे...

गत महीने की संस्था की गतिविधियाँ

- अन्नक्षेत्र में भोजन के २७ तथा हल्दी दूध के ८ कार्ड बनाए।
- १२१ कैंसरग्रस्त परिवारों को अनाज वितरित किया गया ।
- प्रतिदिन ७२४ मरीज़ों को फल दिया गया ।
- १९ मरीज़ों को रक्त के लिए सहायता प्रदान की गई।
- ६ मरीज़ों के रहने की व्यवस्था की गई।
- ४ मरीज़ों को अलग-अलग संस्था में आवेदन पत्र देकर उपचार पत्र बनाकर दिए गए, जिससे उन्हें अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है।
- कैंसर पीड़ित मरीजों को ९,२७,८३०/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- अन्य मरीजों को ३,८४,५००/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- ६ घायल पशु-पक्षीओं को ईलाज के लिए अस्पताल पहुँचाया गया ।
- पशु-पक्षीओं के ईलाज के लिए रु. २,८९,४००/- की दवाएँ दी गई ।
- अपंग व्यक्तिओं को ३ वोकर, ३ वॉकिंग स्टीक, २ कमोड चेअर, ५ व्हिलचेअर, २ पलंग, ३ ऑक्सिजन मशीन और २ ऑक्सिजन सिलेण्डर दिए गये।
- ४ कैंसरग्रस्त मरीज़ों की फाईल बनाई गई ।
- १३ मरीज़ों ने निःशुल्क ऐम्ब्युलेंस् सेवा का लाभ लिया ।
- २ कर्करोग पीड़ितों को कोलोस्टॉमी बेग कम कींमत पर दी गई ।
- ३ लावारिस कैन्सरग्रस्त मरीजों का अंतिम संस्कार किया गया ।
- रास्ते में बेहाल स्थिति में पड़े रहनेवाले २ व्यक्तिओं को वृद्धाश्रम पहुँचाया गया।

देहदान प्रतिज्ञा पत्र

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एन्ड केअर ट्रस्ट की विभिन्न प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति 'देहदान' की है, किसी भी भाई-बहन की इच्छा वसियत (विल) (मरने से पहले के घोषणापत्र) बनाने की हो, तो स्वतः के हाथ से एक प्रतिज्ञापत्र भरना होगा। स्वतः के शरीर या शरीर के किसी भी भाग को आधुनिक प्रगति के लिए या मेडिकल साइन्स के विद्यार्थियों के काम में आए इस हेतु से प्रतिज्ञापत्र बनाए गये हैं। प्रतिज्ञापत्र जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय से आपको मिलेंगे या कुरियर द्वारा आपको पहुंचा दिये जाएंगे।

व्यक्ति विशेष

सर्जेई ब्रिन (१९७३) *और* लैरी पेज (१९७३)

दुनिया में जितनी भी वेबसर्च होती है, उसमें से ६५ प्रतिशत गूगल पर होती है। गूगल के १०,००० कंप्यूटर १०० भाषाओं में वेबपेज सर्च करते हैं। २०११ से गूगल ने 'गूगल वॉइस सर्च' भी शुरू कर दी है। बहरहाल, सर्जेई ब्रिन और लैरी पेज ने जब वेब की दुनिया का सबसे लोकप्रिय सर्च इंजन गूगल बनाया था, तो उनका हाल भी पियेर ओमिदयार जैसा था। उन्होंने भी यह काम बिज़नेस करने के लिए नहीं, बल्कि शौक-शौक में किया था।

सर्जेई ब्रिन और लैरी पेज वेबसर्च की एक बहुत बड़ी समस्या को दूर करना चाहते थे। इंटरनेट पर वेबसर्च में दिक्कत यह होती है कि सर्च इंजन हज़ारों-लाखों रिजल्ट खोज लेता है, लेकिन लोग अक्सर पहले दस परिणामों पर ही नजर डालते हैं। पूरे रिजल्ट देखने में तो कई दिन का समय लग सकता है और किसी व्यक्ति के पास इतना समय नहीं होता है। वेब के विस्तार के साथ-साथ रिजल्ट्स के वेब पेजेस की संख्या भी बढ़ती जा रही है। ब्रिन और पेज ने सर्च इंजन को आदर्श बनाने पर ध्यान केंद्रित किया, जिसका मतलब यह था कि सर्च करने वाले को मनचाही सामग्री पहले दस रिजल्ट्स में ही मिल जाए। अपने सर्च इंजन का आविष्कार करने के बाद पेज और ब्रिन इसे बेचने का प्रस्ताव लेकर बड़ी-बड़ी कंपनियों के पास गए। जब

कोई बड़ी कंपनी इसे खरीदने को तैयार नहीं हुई, तो ७ सितंबर १९९८ को उन्होंने खुद अपनी कंपनी बना ली।

उन्होंने अपनी वेबसाइट पर कम से कम ग्राफिक्स रखे, ताकि रिजल्ट्स जल्दी से स्क्रीन पर आ जाएँ और लोगों को इंतजार न करना पड़े। इसी कारण उन्होंने तस्वीरों के बजाय सिर्फ शब्दों वाले विज्ञापनों पर जोर दिया। ग्राहकों की सुविधा पर केंद्रित होने के कारण सन् २००० तक गूगल दुनिया का सबसे लोकप्रिय सर्च इंजन बन गया और इसके पास एक अरब वेब पेजेस की इंडेक्स हो गई। गूगल की स्थापना करके इन दोनों दोस्तों ने इंटरनेट के क्षेत्र में क्रांति कर दी और जब गूगल कंपनी का शेयर सितंबर २००४ में शेयर बाज़ार में सूचीबद्ध हुआ, तो सर्जेई ब्रिन और लैरी पेज तत्काल अरबपति बन गए। आज सर्जेई ब्रिन और लैरी पेज में से प्रत्येक के पास १८.७ अरब डोलर की संपत्ति है और वे फोर्ब्स पत्रिका की दुनिया के अमीरों की सूची में २५वें स्थान पर पर हैं । ■

जलाराम अन्नदानक्षेत्र

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
☆ मनिषा यतीन मोदी	भायखला	२८,५००/-
☆ हीर हेतल राहुल माने	घाटकोपर	११,०००/-
☆ स्व. सनतकुमार जे. संजीत ह. भरत रामक्रिष्ण राणे	शिवरी	७,०००/-
☆ हेमंत अमृते की २री पुण्यतिथि नि. ह. परिणी हेमंत अमृते	गोरेगाँव	४,०००/-
☆ विनीत सुरेशमल जैन	लालबाग	४,०००/-

चिराग तले अंधेरा

टीचर ने चिराग का आधा-अधूरा होमवर्क देखा तो आगबबूला हो उठी। उसने डांटते हुए कहा कि ''तुम्हारे घर में तो सभी सुख-सुविधाएं मौजूद हैं। फिर भी न जाने तुम पढ़ाई में ध्यान क्यों नहीं लगाते ? क्या तुम जानते हो कि टेलीफोन का आविष्कार करने वाले ग्राहम बेल सारी-सारी रात मोमबती जलाकर उसकी रोशनी में पढ़ाई किया करते थे। दुनिया के सबसे विद्वान लेखक शेक्सपियर ने अपनी सभी पुस्तकें स्ट्रीट लाइट के नीचे बैठकर लिखी थीं। चिराग ने इस बात पर भी टीचर से मज़ाक करते हुए कहा कि ''मुझे एक बात समझ नहीं आती कि ये सभी लोग दिन में क्या करते रहते थे?'' टीचर ने लाल-पीले होते हुए कहा कि ''ओ अक्ल के दुश्मन! तुम हर समय अक्ल के पीछे लट्ठ लिए क्यों फिरते रहते हो ? आज के बाद मेरी क्लास में पढ़ाई करनी है तो पहले अपने पापा को यहां बुलाकर लाओ।'' चिराग ने अकड़ते हुए कहा कि ''आप शायद मेरे पापा को नहीं जानतीं। वे इस राज्य के बिजली मंत्री हैं। उनके पास इस प्रकार के फालतू कामों के लिये कोई समय नहीं होता।'' टीचर ने कहा, ''तुम अभी फोन पर मेरी उनसे बात करवाओ।''

जब चिराग ने फोन मिलाया तो उसके पिता ने टीचर से कहा, ''आपको मालूम ही होगा कि शहर में रात के वक्त लोगों को अंधेरे के कारण परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस अंधेरे की वजह से कई लोग लूटपाट की वारदातों का शिकार हो चुके हैं। इसलिये मैं शहर में बिजली व्यवस्था को ठीक करवाने में बहुत व्यस्त हूँ ताकि सारे शहर को रोशन कर सकूँ।'' टीचर ने बड़े ही सादे ढंग से कहा कि, ''सर, बरसों से एक मुहावरा पढ़ती और पढ़ाती आई हूँ कि चिराग तले अंधेरा, लेकिन आज पहली बार उसका जीता-जागता उदाहरण देखने को मिला है। आप सारे राज्य को तो रोशन कर रहे हैं, लेकिन आप शायद यह नहीं जानते कि आपका बेटा आपके

खानदान की लुटिया डुबो रहा है। यदि आप चाहते हैं कि वह भी आपकी तरह कामयाब इंसान बन सकें तो आज से ही कुछ समय निकालकर उसे भी उजाले की राह पर लाने का प्रयास शुरू कर दो।'' टीचर जी की इन बातों का क्या असर होगा, यह कहना तो मुश्किल है, लेकिन उनके महत्त्वपूर्ण विचारों से पूर्ण सहमति जताते हुए जौली अंकल मंत्री जी को इतना मशविरा जरूर देना चाहेंगे कि दुनिया को रोशन करने से पहले अपने घर के चिराग को भी संभालना जरूरी होता है। वरना जमाना तो मुहावरों की भाषा में आपसे यही कहेगा कि 'चिराग तले अंधेरा।' ■

कर्करोग की भयानकता

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
☆ वर्धमान कुमार जैन	राजस्थान	४०,०००/-
☆ अंकित जैन	राजस्थान	२०,०००/-
☆ प्रतिभा मोहन खेर	दादर	१०,०००/-
☆ निर्मलाजी आर. पोपट ह. मीना पोपट	दादर	५,०००/-
☆ नंदा जे. ढेकले	परेल	५,०००/-
☆ संदीप एस. घाडीगाँवकर	प्रभादेवी	५,०००/-
☆ विनीत जैन	दादर	२,०२०/-
☆ शामसुंदर सीताराम नेवरेकर	वडाला	२,०००/-
☆ लक्ष्मीबाई डी. फाटक ह. सुखदा ए. फाटक	कुर्ला	१,०००/-
☆ नरेन्द्र भाउ चवाण	गोरेगाँव	१,०००/-
☆ किरण भोसले	प्रभादेवी	१,०००/-
☆ मनिष भरत चंदे	परेल	१,०००/-
☆ रोहित वसंत राणे	कांदिवली	५००/-
☆ दर्शना तुषार कोठारे	हिंदमाता	५००/-

कहानी

पथ के दावेदार

(गतांक से आगे)

– शरतचंद्र

अगले दिन तीसरे पहर को सभी बातों और सारी घटनाओं का पूर्णरूप से एक-एक करके वर्णन कर चुकने पर अन्त में भारती ने कहा- ''अपूर्व बाबू महान पुरुष हैं-ऐसा समझने की भूल तो मैंने एक भी नहीं की, लेकिन वे इतने साधारण, तुच्छ हैं-यह धारणा भी नहीं थी।''

डॉक्टर सव्यसाची उसकी ओर देखकर गम्भीर मुँह से बोले- ''लेकिन मैं जानता था। वह इतना तुच्छ न होता तो क्या तुम्हारा इतना अधिक प्रेम इतने तुच्छ कारण से चला जाता? जाने दो, जान बच गई बहन।''

इधर-उधर बिखरी हुई वस्तुओं, विशेष रूप से फर्श पर बिखरी पड़ी पुस्तकों के ढेर देखने से ही यह बात समझ में आ जाती है कि इसके पहले पुलिस इस कमरे की तलाशी ले चुकी है। उनको ही सजावट के साथ रखती हुई भारती बातचीत कर रही थी। उसने अपने हाथ का काम बन्द करके आश्चर्य के साथ आँखें उठाकर कहा- ''तुम हंसी कर रहे हो भैया?''

''नहीं तो।''

''जरूर कर रहे हो।''

डॉक्टर बोले- ''मुझ सरीखे मनुष्य से, जो बम-पिस्तौल लिए मनुष्यों का खून करता फिरे, ऐसे मजाक की आशा?''

भारती बोली- ''मैं तो यह नहीं कहती कि तुम मनुष्यों का खून करते फिरते हो। यह काम तो तुम कर ही नहीं सकते। लेकिन मजाक के सिवा यह क्या हो सकता है? दो-तीन घण्टे के अन्दर ही जो सब-कुछ भूलकर केवल हाथ के दाग और पांच सौ रुपयों की नौकरी याद रख सका उससे बढ़कर क्षुद्र व्यक्ति तो मैं दूसरा नहीं देख

पाती। तुमने कहा था कि यह मेरा मोह है। अच्छी बात है, यदि ऐसा ही हो तो तुम आशीर्वाद दो कि मेरा यह मोह चिरकाल के लिए दूर हो जाए, मैं पूरे तन-मन के साथ तुम्हारे देश के काम में लग जाऊँ।''

डॉक्टर हंसकर बोले- ''तुम्हारे मुँह की भाषा तो मोह काटने के लिए ठीक ही मालूम हो रही है, इसमें सन्देह नहीं, लेकिन मुश्किल यह है कि तुम्हारे कण्ठ-स्वर में इसका आभास तक नहीं है। खैर, वह चाहे जो हो-भारती, तुमसे हमारे देश का काम तिल-भर भी नहीं हो सकता। तुमसे तो अपूर्व बाबू बहुत अच्छे हैं। तुम लोगों में एक दिन समझौता हो भी सकता है।''

भारती बोली- ''इसका अर्थ यह है कि मैं देश को प्यार नहीं कर सकती ?''

''अनेक परीक्षाएं देने से पूर्व कुछ नहीं कहा जा सकता।''

''भैया, मैं तुम्हारी सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो सकूँगी। तुम्हारे काम में इतने स्वार्थ, इतने सन्देह और इतनी क्षुद्रता के लिए स्थान नहीं है।''

उसकी उत्तेजना से डॉक्टर हंस पड़े और फिर नाटकीय ढंग से अपने माथे को ठोंकते हुए बोले- ''हाय रे मेरा दुर्भाग्य! देश का अर्थ तुमने क्या समझ लिया है- लम्बी-चौड़ी जमीन, वह नदी और पहाड़? कोवल एक अपूर्व को लेकर ही तुम्हें जीवन में धिक्कार पैदा हो गया, वैरागिन होना चाहती हो। और यह तो नहीं जानती कि यहां सैकड़ों-हजारों अपूर्व ही नहीं, उनके बड़े भैया लोग भी विचरण करते हैं, और पराधीन देश का सबसे बड़ा अभिशाप यह कृतघ्नता ही तो है। जिनकी सेवा करोगी, वे ही तुम्हें सन्देह की दृष्टि से देखेंगे, जिनके प्राण बचाओगी, वे ही तुमको बेच देना चाहेंगे। मूढ़ता और कृतघ्नता तुम्हें पग-पग पर सुई की भांति चुभती रहेंगी। न तो श्रद्धा है, न सहानुभूति है यहां। कोई पास तक नहीं बुलाएगा, कोई सहायता देने नहीं आएगा, विषैला सांप समझकर लोग दूर हट जाएंगे। देश को प्यार करने का

यही हमारा पुरस्कार है भारती, इससे अधिक यदि कुछ दावा करना हो तो वह परलोक में ही हो सकता है। इतनी बड़ी भयंकर परीक्षा तुम किसलिए देने जाओगी बहन! वरन् तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि अपूर्व को साथ लेकर सुखी बनो-मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि अपनी सारी दुविधाओं और सभी संस्कारों को नीचे दबाकर किसी दिन तुम्हारे मूल्य पर उसकी दृष्टि अवश्य ही पड़ जाएगी।''

भारती की आँखों आंसू से भर उठीं, लेकिन कुछ देर तक चुपचाप मुँह झुकाए रहकर उसने पूछा- ''तुम क्या मुझ पर विश्वास न कर सकने के कारण किसी तरह मुझे विदा कर देना चाहते हो भैया?''

उसके इस अत्यन्त सरल और संकोच रहित प्रश्न का कोई ऐसा ही सीधा-सा उत्तर शायद डॉक्टर के मुँह में नहीं आया। वे हंसकर बोले- ''तुम्हारी तरह रानी बेटी की माया कोई सहज में छोड़ सकता है बहन? लेकिन कल अपनी आँखों से ही तुम देख चुकी हो कि इसमें कितनी चोरी-छिपाव, कितनी हिंसा, कितना मर्मान्तक क्रोध सना हुआ है। तुम्हारी तरफ देखने से मालूम होता है कि इन कामों के लिए तुम नहीं हो-इसमें तुम्हें खींच लाना अच्छा काम नहीं हुआ। तुमसे काम लेने का एक दिन है, जिस दिन छुट्टी लेने का मेरा परवाना आ पहुँचेगा।''

इस बार भारती अपनी आँखों का जल रोक न सकी, लेकिन उसे फौरन हाथ से पोंछकर बोली- ''तुम भी अब इन लोगों के साथ मत रहो भैया।''

उसकी बात सुनकर डॉक्टर हंस पड़े, बोले- ''इस बार बहुत ही मूर्खता की बात हो गई भारती!''

भारती विचलित नहीं हुई, बोली- ''यह तो मैं जानती हूँ, लेकिन ये सभी लोग बड़े भयंकर और निर्दय हैं।''

''और मैं?''

''तुम भी बड़े निष्ठुर हो।''

''सुमित्रा कैसी मालूम हुई भारती?''

यह सुनकर भारती का माथा झुक गया। लज्जा के मारे वह कुछ उत्तर न दे सकी, लेकिन उत्तर के लिए तकाजा भी नहीं आया। कुछ देर दोनों ही चुप बैठे रहे। अधिक देर तक नहीं, लेकिन इतनी ही चुप्पी के अवकाश पथ से, इस आश्चर्यमय मनुष्य के उससे भी अधिक आश्चर्यमय हृदय के रहस्यावृत अन्त: स्थल में अकस्मात बिजली-सी कौंध उठी।

लेकिन दूसरे ही क्षण डॉक्टर ने समूची बात को दबा दिया। सहसा बच्चे की तरह सिर हिलाकर वे स्निग्ध स्वर में बोले, ''अपूर्व के प्रति तुमने बड़ा अन्याय किया है भारती! इतना बड़ा घातक काण्ड इसके भीतर है, इसकी कल्पना भी शायद उस बेचारे ने नहीं की होगी। तुमसे सच कहता हूँ, इतना छोटा, इतना हीन वह कदापि नहीं है। नौकरी करने विदेश आया है, घर में मां है, भाई है, देश में बन्धु-बान्धव हैं। सांसारिक उन्नति करके दस-पांच में एक आदमी बनेगा-यही उसकी आशा है। लिखना-पढ़ना सीखा है, भले आदमी का लड़का है, पराधीनता की लज्जा वह अनुभव करता है। और दस बंगाली लड़कों की तरह वह भी वास्तव में देश का कल्याण चाहता है। इसी कारण जब तुमने कहा कि पथ के दावेदार का सदस्य बन जाओ, तब उसने कह दिया - 'बहुत अच्छा!' तुम्हारी बात मान लेने में उसका कभी कोई अहित न होगा, इस बात को वह निस्संदेह समझता है। इस विदेश में, आपद-विपद में तुम्हीं उसके लिए एकमात्र अवलम्ब थीं, लेकिन तुम ही उसे अचानक मृत्यु के बीच ढकेल दोगी यह क्या वह जानता था?''

भारती ने आंसू छिपाने के लिए मुँह नीचा करके कहा- ''क्यों तुम उनके लिए इतनी वकालत करते हो? वे इसके योग्य नहीं हैं। सब बातें कल उनके मुँह से सुनी हैं, उसके बाद फिर उन पर श्रद्धा रखना उचित नहीं है।''

डॉक्टर ने हंसकर कहा- ''जीवन में एक अनुचित काम ही तुम कर डालोगी तो क्या होगा?'' यह कहकर थोड़ी देर तक स्थिर रहकर वे कहने लगे ''तुमने तो ध्यान से नहीं देखा भारती, लेकिन मैंने देखा है। उन लोगों ने जब उसको रस्सी से बांध दिया तो वह अवाक् हो गया। उन लोगों ने पूछा- ''तुमने ये सब बातें कही हैं?'' उसने कहा ''हां।'' उन लोगों ने कहा ''इसकी सजा है-मृत्यु, तुमको मरना होगा।'' इसके उत्तर में वह टकटकी बांधकर ताकता रह गया। मैं तो जानता हूँ कि उसकी विह्वल दृष्टि उस समय किसी को ढूंढ़ रही थी। इसी से तुमको बुलाने के लिए मैंने आदमी को भेजा था बहन। अब उसने चाहे जो भी तुमको कहा हो-भारती, लेकिन इस धक्के को वह अब तक भी शायद सम्भाल नहीं सका है ।'' *(क्रमशः)* ■

हल्दी दूध योजना

दाताओं के नाम	एरिया	रुपए
☆ प्रीती प्रमोद राणे	परेल	२,५००/-
☆ शांतिलाल जैन	लालबाग	१,०००/-
☆ विष्णु नारायण गोखले ह. हेमा विष्णु गोखले	दादर	८००/-
☆ स्व. चंद्रकांत जाधव की पुण्यस्मृति नि. ह. लता चंद्रकांत जाधव	वसई	७००/-
☆ मानसी नायक	माहिम	७००/-
☆ अमेया जाधव	परेल	७००/-
☆ मंगला बी. पटवर्धन ह. दिपक बी. पटवर्धन	पूने	७००/-
☆ बालचंद्र विनायक पटवर्धन ह. दिपक बी. पटवर्धन	पूने	७००/-

दया का असर

कलिंग युद्ध में भीषण हिंसा के कारण सम्राट् अशोक का हृदय पसीज उठा और उसने बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली। इस धर्म का प्रचार करने हेतु उसने अपनी पुत्री संघमित्रा को लंका भेजा। बौद्ध धर्म के अनुयायी बनाने में जहाँ उसे सफलता प्राप्त हुई, वहीं दूसरे धर्मवाले उसके शत्रु भी हो गये। उन्होंने विचार-विमर्श कर उसे समाप्त करने का निश्चय किया।

अमावस्या की एक रात्रि को उनमें से एक युवक उसकी कुटिया के समीप आया।

उसने देखा कि आँगन में दीपक के पास एक गाय के समीप संघमित्रा बैठी हुई है। वह युवक पीछे से आया और उसने हाथ में रखे छुरे से उस पर वार करना चाहा ही था कि उसके हाथ ठिठक गये, हाथ से छुरा गिर पड़ा। बात यह थी कि संघमित्रा अपने पहने वस्त्रों को फाड़कर उस घायल गाय के घाव पोंछ रही थी। यह दृश्य देखकर उसका पत्थर-तूल्य हृदय भी द्रवित हो गया। वह संघमित्रा के चरणों में गिर पड़ा। उसने अपनी पूर्व मनीषा बताती तथा क्षमा माँगी। ■

आजमाकर देखिए

उत्तम बाजीकरण योग

दालचीनी २०० ग्राम, काले तिल २०० ग्राम, भीमसेनी कपूर या कपूर ५ ग्राम, उटंगन के बीज १०० ग्राम और शहद आवश्यकतानुसार लें। दालचीनी, काले तिल, उटंगन के बीज पहले अलग-अलग पीसें फिर इक्ट्ठा मिलाकर पीसें। अन्त में कपूर और शहद मिला लें। फिर प्रातः १० ग्राम की मात्रा में इसे गर्म दूध या जल से प्रयोग करें। प्रयोग काल में स्त्री से दूर रहे। ब्रह्मचर्य पालन के साथ ४० दिन प्रयोग करें। खोई हुई मर्दाना शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए अत्यन्त सस्ती, निर्दोष तथा उच्च कोटि की बाजीकरण औषधि है। ■

हिंसा के मुख में अहिंसा

एक बार संत तुकडोजी महात्मा गांधीजी के आश्रम में एक महीने के लिए रहने आए। गांधीजी ने उन्हें अपने पास ही ठहराया। वह उनके प्रार्थना-कीर्तन में सम्मिलित होते और उनसे विचार-विमर्श करते थे।

एक दिन बापू ने उन्हें अपनी बात समझाने के लिए एक कहानी सुनाई : एक गरीब आदमी था और एक पैसे वाला। दोनों के ही घर आसपास थे। एक दिन गरीब के घर में चोर आ गए। गरीब की आँख खुल गई। उसने देखा कि चोर इधर-उधर परेशान होकर चीजें खोज रहे हैं।

वह उठा और बोला- ''आप क्यों परेशान होते हैं। मेरे पास जो कुछ है, वह मैं अपने आप लाकर दिए देता हूँ।''

इतना कहकर उसके पास जो दस-पाँच रुपए थे, वे उनके हवाले कर दिए। चोरों ने उस आदमी की ओर अचरज से देखा और रुपये लेकर चलते बने। मगर, उतने से चोरों का मन नहीं भरा। लोभ दूर नहीं हुआ। वे तत्काल धनी आदमी के यहाँ पहुँचे। वह पहले से ही जाग रहा था। उसने उनकी बातें सुन ली थी। सोचा, जब गरीब ऐसा कर सकता है तो वह क्यों नहीं कर सकता है।

उसने चोरों से कहा - ''आप लोग बैठो। मेरे पास जो कुछ है, वह में तुम्हें दिए देता हूँ।'' फिर, उसने अपनी जमा पूंजी लाकर उनके सुपुर्द कर दी।

चोरों को काटो तो खून नहीं। उनके अंदर राम जाग उठा। अमीर-गरीब का सारा माल छोड़कर वे चले गए और अपना धंधा त्यागकर साधु बन गए।

यह कहानी सुनाकर महात्मा गांधी ने कहा - ''मैं हिंसा के मुख में अहिंसा को इसी तरह झोंक देना चाहता हूँ। आखिर कभी तो हिंसा की भूख शांत होगी। अगर दुनिया को शांति से जीना है तो मेरी जानकारी में इसका दूसरा और कोई रास्ता नहीं है।'' ■

बिपीनभाई दाणी (हरसोल) एकता परिवार (I.G.) माटुंगा की प्रेरणा से

दाताओं के नाम	एरिया	योजना	रुपया
☛ स्व. मीतेश महेन्द्र शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे	बोरीवली	जीवदया	५,०००/-
☛ स्व. ललीतभाई शामळदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे	बोरीवली	जीवदया	५,०००/-
☛ वर्षाबेन हिमांशुभाई गांधी के जन्मदिन के अवसर पर	माटुंगा	जीवदया	२,५००/-
☛ स्व. अरविंदभाई वल्लभदास सोनेचा के आत्मश्रेयार्थे ह. हंसाबेन अरविंदभाई सोनेचा परिवार	कांदिवली	दवाइयाँ	२,०००/-
☛ स्व. महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा) के आत्मश्रेयार्थे ह. ईन्दुबेन, अल्पेश, संजय गांधी परिवार	बोरीवली	जीवदया	१,२००/-
☛ स्व. नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे ह. मंजुलाबेन नटवरलाल शाह परिवार	कांदिवली	जीवदया	१,०००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. कांतिलाल नगीनदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे ह. कांतिलाल नगीनदास शाह परिवार	भायंदर	दवाईयाँ	१,०००/-
☛ स्व. सरस्वतीबेन रसीकलाल शाह (ऊनावा) के आत्मश्रेयार्थे ह. धवल शिरीष शाह	सायन	जीवदया	५००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. बेचरदास दोशी के आत्मश्रेयार्थे ह. दिलीप बी. दोशी	मुलुंड	दवाइयाँ	५००/-
☛ स्व. शारदाबेन और स्व. चिमनलाल साकळचंद शाह (उवारसद) के आत्मश्रेयार्थे ह. हेमा प्रदीप शाह	पूना	जीवदया	५००/-

काव्य

बहुत उदास रह चुका,
काफी उम्र भी खो चुका।
अब और नहीं सही जाती
यह गहरी अजीब उदासी।
क्यों इतना दुःख पाल रहा हूँ,
खुद को नहीं समझा पाता।
निकलना पड़ेगा, मन के गहरे अंधेरे से,
नहीं तो उदासी का भूत मुझे
मन के अंधेरे में कच्चा चबा जायेगा।
छोटे से जीवन में होते हैं,
कुछ ही क्षण, पल, घड़ी, दिन-रात,
न जाने कब दबोच ले काल
जो लगाये बैठा है घात।
सोचता हूँ, प्रभु में विश्वास बढ़ाऊँ
सबको देखता है, तो मुझे भी देखेगा,
दिखायेगा, जो है मेरे पास
खोल अवगुण्ठन मन के मेरे,
रखेगा मुझको अपने पास।
छोड़ो यह उदासी,
आशा रखो, विश्वास करो उसका
क्या नहीं है तुम्हारे पास,
जो है उसी से जीवन सजाओ
उसी से जीवन में आनन्द रस घोलो,
प्रेम, आनन्द और उमंग से भरो खुद को
फिर होगी हर दिन होली, रात दिवाली
संगीतोत्सव, भगवान का
जन्मोत्सव मनाओ।
दादीजी के जाओ, मन वांछित फल पाओ।

■

जीवनपथ वार्षिक सदस्यता शुल्क

* आप सिर्फ रू. २०१/- और २००१/- जीवन ज्योत कैन्सर रीलीफ एन्ड केअर ट्रस्ट में देकर बाहर गाँव से आनेवाले कैन्सर पीड़ित मरीज जो लम्बे समय से पीड़ित हैं उनकी देखभाल में आप भी भागीदार हो सकते हैं।

कहानी

देर हो अन्धेर नहीं

काफी समय पहले की बात है-पाटनपुर नगर में एक व्यापारी रहा करता था। उसका नाम हरजीत था। हरजीत जवान आदमी था । स्वस्थ शरीर, घुंघराले बाल, हँसता हुआ चेहरा। उसका स्वभाव बड़ा विनोदी था-और वह गाना गाने का भी शौकीन था। जब कभी भी वह अकेला या तन्हाई महसूस करता तो गाने लगता था।

उसको शराब पीने की भी आदत पड़ी हुई थी। जब कभी भी उसके पास पैसा आ जाता था, उसे रंगरेली सूझने लगती थी। मगर शादी हो जाने के बाद उसकी यह सारी आदतें धीरे-धीरे बदल गई थीं। कभी-कभी यह खास मौकों पर ही शराब पी लिया करता था, वरना शराब उसने छोड़ रखी थी।

एक बार उसने कार्तिक के मेले में जाने की बात सोची।

उसने अपनी मेले जाने वाली बात अपनी पत्नी को बताई और उससे जाने की आज्ञा मांगी।

पत्नी ने कहा- ''देखो जी, चाहे आप कितनी भी जिद कर लीजिए, लेकिन मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी।''

''क्यों?''

''बात यह है कि कल रात मैंने एक बड़ा ही बुरा सपना देखा था, इसलिए मेरा दिल बहुत डर रहा है।'' पत्नी ने डरते हुए कहा।

हरजीत पत्नी की बात सुनकर हँसने लगा।

''आप मेरी बात सुनकर हंस क्यों रहे हैं?'' पत्नी ने आश्चर्य से उसकी और देखा- ''क्या आप मुझे झूठा समझ रहे हैं?''

''नहीं, यह बात नहीं है।''

''फिर क्या बात है?'' वह उत्सुकता से बोली।

हरजीत हँसते हुए बोला- ''में जानता हूँ कि तुमको इस बात का डर लग रहा है कि मैं मेले में गया तो बहक जाऊँगा, और पैसा बर्बाद करके घर लौट आऊँगा- क्यों ऐसा ही सोच रखी थीं न ।''

पत्नी गम्भीरता से बोली ''मैं ठीक से समझ नहीं पा रही हूँ कि मुझे यही डर है या कोई दूसरा डर सता रहा है। लेकिन मेरा विश्वास करो, कि मैंने कल रात बहुत बुरा सपना देखा है।''

''तुमने सपने में क्या देखा?''

''सपने में मैंने देखा कि तुम जब लौटें और तुमने अपनी टोपी उतारी तो सारे बाल तुम्हारे सफेद हो गए हैं।''

यह सुनकर हरजीत और भी ज्यादा हँसने लगा।

''इसमें हँसने वाली कौन-सी बात है?'' पत्नी ने आश्चर्य से देखा।

हरजीत बोला- ''अरे पगली, यह तो और भी अच्छे भाग्य का सपना है। देख लेना कि इसका फल होगा कि मैं जितना माल ले जाता हूँ, वह सब बिक जाएगा और तुम्हारे लिए तरह-तरह की सौगात लेकर लौटूंगा।''

पत्नी उसकी बात सुनकर सन्तुष्ट हो गई। उसने सोचा कि शायद मेरे पति ही सही कह रहे हैं।

इस प्रकार उसने परिवार से राजी-खुशी विदा ली और सफर पर चल दिया। आधे पड़ाव चलने पर उसे अपनी जान-पहचान का एक और व्यापारी मिला, वे दोनों एक ही सराय में ठहर गए। उन लोगों ने साथ ही खाना खाया और फिर पास-पास के कमरों में सोने चले गए।

हरजीत को सवेरे देर तक सोने की आदत बिल्कुल नहीं थी। वह हर रोज सुबह-सवेरे ही उठ जाता था। इस तरह उसे ठंड-ठंड में रास्ता चलना आसान लगता था। इसलिए उसने सुबह सवेरे ही गाड़ी वाले को बुलााया।

उस समय गाड़ी वाला सो रहा था। उसने नींद से जगाकर उससे कहा- ''गाड़ी जोतो और चलो।''

इतना कहकर वह सराय के मालिक के पास गया, जो वहीं पिछवाड़े में रहता था। सराय वाले का किराया चुकाया, फिर उसे धन्यवाद दिया और हरजीत अपने सफर पर आगे बढ़ गया।

वह कोई दस कोस की दूरी पर ही गया था। वहां जाकर उसने बैल खोले, ताकि वह कुछ चारा खा सकें।

उसके बाद वह खुद भी थोड़ा आराम करने के लिए लेट गया। थोड़ा सुस्ताने के बाद फिर उसने सराय वाले को चाय लाने के लिए कहा और अपनी बांसुरी निकालकर बजाने लगा।

तभी एक इक्का आकर वहां रुका।

हरजीत उस इक्के को आश्चर्य से देखने लगा। इक्का काफी सजा-धजा हुआ था-और घोड़े के गले में घन्टी बज रही थी।

उस तांगे में से एक अफसर नीचे उतरे। उसके पीछे-पीछे दो सिपाही भी थे। अफसर ने आकर हरजीत से सवाल पूछना आरम्भ कर दिये ''तुम कौन हो और कहां से आ रहे हो?''

हरजीत ने जवाब दिया- ''आइये, आप लोग पहले चाय पी लीजिए। सर्दी बहुत पड़ रही है।''

लेकिन अफसर इस निमन्त्रण को अनसुना करके अपनी जिरह पर कायम रहे। वह बोले- ''तुम पिछली रात कहां ठहरे थे? अकेले थे, या कोई व्यापारी भी तुम्हारे साथ था? आज सवेरे वह दूसरा आदमी तुम्हें मिला था? अंधेरे-तड़के तुम सराय से क्यों चल दिए?''

इतने सारे सवाल एकसाथ सुनकर हरजीत आश्चर्य में पड़ गया। उसकी समझ

में नहीं आ रहा था कि आखिर उससे इतने सवाल क्यों किये जा रहे हैं? फिर भी वह सब बताता चला गया।

उसने कहा- ''आप तो मुझसे इस प्रकार सवाल-पर-सवाल पूछे जा रहे हैं, जैसे मैं कोई चोर-डाकू हूँ।''

''आपको हमारे हर सवाल का जवाब देना ही पड़ेगा।'' अफसर ने कठोरता के साथ कहा।

''में अपने काम से जा रहा हूँ, मुझसे कोई सवाल करने की जरूरत नहीं है।'' हरजीत बोला।

''आप इस प्रकार नहीं जा सकते।''

''मगर क्यों?''

अफसर ने पीछे खड़े सिपाहियों को अपने पास बुलाया। और फिर कहने लगा- ''मैं इस जिले का पुलिस अफसर हूँ। सवाल मैं इसलिए पूछ रहा हूँ कि जिसके साथ तुम कल रात ठहरे हुए थे, उसका आज गला कटा हुआ पाया गया है। इसलिए हम लोगों को आप पर भी सन्देह हो रहा है, कि कहीं उसका खून आपने तो नहीं किया।''

''मैंने!''

''जी हां।''

''मगर मैं ऐसा क्यों करूँगा?'' वह आश्चर्यचकित हो गया।

''यह तो हम नहीं जानते, लेकिन इस समय हम आपकी तलाशी लेना चाहते हैं।'' अफसर ने कहा।

इस पर वे तीनों उसके कमरे में घुस गए। फिर अफसर और सिपाहियों ने मिलकर उसके सामान की तलाशी लेना शुरू कर दिया। एकाएक उन्होंने क्या देखा कि उसके सामान के बैग में एक छुरा रखा है।

अफसर ने पूछा ''यह छुरा किसका है?''

हरजीत आश्चर्य से उस छुरे को देखने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ये छुरा उसके बैग में आया कैसे? खून के दागी उस छुरे को अपने सामान में

देखकर वह अचकचा गया था। उसके चेहरे पर भय की परछाइयां स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

''इस चाकू पर खून के निशान कैसे हैं?'' अफसर ने पूछा।

हरजीत ने जवाब देने की कोशिश की, लेकिन शब्द उसके मुँह से नहीं निकल पा रहे थे।

फिर उसने लड़खड़ाती आवाज में कहा ''ये छुरा मैं... मेरा... नहीं... है... मैं कुछ नहीं जानता।''

पुलिस अफसर ने कहा- ''इसीलिए सवेरे अपने बिस्तर पर वह व्यापारी मरा हुआ पाया गया। किसी ने उसका गला काट दिया है। एक तुम्हीं हो सकते हो जिसने यह काम किया है। मकान अन्दर से बन्द था। तुम्हारे अलावा वहां कोई था भी नहीं।''

''लेकिन मैं ऐसा क्यों करूँगा?'' *(क्रमशः)* ■

मानवता के साद को मिला हुआ प्रतिसाद

नाम	एरिया	रुपया
☆ श्रीकांत आर. मालवणकर	बोरीवली	५१,०००/-
☆ श्री दिगंबर जैन सेवा समिती	कालबादेवी	५,१००/-
☆ अश्विनी मनोहर नायक	बोरीवली	५,०००/-
☆ संतोष सावंत	मलाड	४,०००/-
☆ पूजा के. फतनानी	मुलुंड	३,०००/-
☆ सोनल आर. बोरकर	मुलुंड	२,०००/-
☆ सुधीर विष्णु परकाले	कालाचौकी	२,०००/-
☆ बालक्रिष्ण बुद्धजी सावंत	चींचपोकली	२,०००/-
☆ डॉ. सोनल जैन	वाशी	१,५००/-
☆ प्रेमचंद्र अग्रवाल	वडाला	१,५००/-
☆ श्री राम प्रसाद	एन्टोपहिल	१,०००/-

प्रेरक कथा

अच्छे कर्म

एक व्यक्ति के तीन मित्र थे। जब वो व्यक्ति मरने लगा तो उसने अपने उन तीनों मित्रो को बुलाकर कहा, ''तुम तीनों नें आजीवन मेरा साथ निभाया है। अब मेरे मरने का समय आ गया है । क्या तुम मेरे मरने के बाद भी मेरा साथ निभाओगे?''

पहला मित्र बोला, ''मैं जीवन भर तुम्हारे साथ रहा लेकिन अब मैं बेबस हुँ । अब मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता ।''

दुसरा बोला, ''मैं तुम्हारी मृत्यु को रोक तो नहीं सकता । आजीवन हर परिस्थिति में मैं तुम्हारा साथ देता रहा हुँ । मैं सुनिश्चित करूँगा की तुम्हारा अंतिम संस्कार ठीक से हो।''

तीसरा मित्र बोला कि, ''मित्र ! तुम चिन्ता मत करो। मैं मरने के बाद भी तुम्हारे साथ रहूँगा। तुम जहाँ जाओगे मैं तुम्हारे साथ आऊँगा ।''

आप जानते हो यह व्यक्ति के तीन मित्र कौन हैं ? धन, परिवार और कर्म ।

धन आपका पहला मित्र है जो तब तक आपके साथ है जब तक आप जिवित है।

परिवार आपका दूसरा मित्र है । जो आपके अंतिम संस्कार तक आपके साथ है।

और कर्म आपका तीसरा मित्र है जो मरने के बाद भी आपके साथ रहेगा।

मरने के बाद इस जीवन में लोग आपको आपके कर्म से याद रखेंगे। और मरने के बाद आपका अगला जन्म आपके कर्म पर ही निर्धारित होगा ।

इसलिये सबसे ज्यादा ध्यान अपने कर्मो पर दो और हमेशा अच्छे कर्म करो। ■

अवयव दान, नेत्रदान और त्वचादान

जीवन के बाद भी एक सत्कार्य अर्थात नेत्रदान और अवयव दान । आज के वैज्ञानिक युग में मृत्यु के पश्चात शरीर के कुछ विभिन्न अंगों से यदि किसी अन्य व्यक्ति को जीवनदान देना संभव हो तो उसे जलाना, नष्ट नहीं करना चाहिए, उसे दान करना चाहिए। मृत्यु के बाद भी सत्कार्य संभव है। अतः जीवन पश्चात का अवयव दान एक उत्तम दान हो सकता है।

ई. श्रीधरन - 'निर्माण पुरुष'

प्रस्तुति - **दर्शना विचारे,** *थाणे*

ई. श्रीधरन - वो शख्स जिसने भारत को 'मेट्रो' की रफ्तार दी!! भारत में सरकारी काम का मतलब होता है-देरी। लेकिन श्रीधरन ने दिल्ली मेट्रो में 'उल्टी घड़ी' (Reverse Clock) लगवा दी थी।

वे कहते थे- हमें प्रोजेक्ट खत्म होने की तारीख देखनी है, शुरू होने की नहीं।

मेट्रो मैन की वो बातें जो उन्हें 'इंजीनियरिंग का भगवान' बनाती हैं:

पंबन पुल का चमत्कार (१९६४):

जब रामेश्वरम को जोड़ने वाला पंबन पुल (Pamban Bridge) तूफान में टूट गया, तो रेलवे ने कहा इसे ठीक करने में ६ महीने लगेंगे।

एक युवा इंजीनियर श्रीधरन को काम सौंपा गया। उन्होंने इसे सिर्फ ४६ दिनों में ठीक कर दिया! यह उनकी पहली बड़ी जीत थी।

कोंकण रेलवे (Mission Impossible):

पश्चिमी घाट के पहाड़ों, नदियों और जंगलों के बीच ७६० किलोमीटर लंबी रेलवे लाइन बिछाना नामुमकिन माना जाता था।

९० से ज्यादा सुरंगे, २००० पुल! श्रीधरन ने अपनी टीम के साथ मिलकर ७ साल में यह अजूबा खड़ा कर दिया। आज भी कोंकण रेलवे दुनिया का इंजीनियरिंग चमत्कार है।

दिल्ली मेट्रो (Changing the Capital):

दिल्ली की सड़कों पर रेंगती ट्रैफिक और ब्लू लाइन बसों का आतंक... याद है?

श्रीधरन ने दिल्ली को विश्व स्तरीय मेट्रो दी। बिना किसी राजनीतिक दबाव के, उन्होंने समय से पहले फेज-१ पूरा किया। आज दिल्ली मेट्रो दुनिया की सबसे बेहतरीन प्रणालियों में से एक है।

सफेद शर्ट, ग्रे पैंट और हमेशा साइट पर मौजूद रहना-यही उनकी पहचान थी। वे ८८ साल की उम्र तक काम करते रहे।

वे भारत के 'निर्माण पुरुष' हैं । ■

बच्चों के रोग

- दाँत निकलने से पहले यदि बच्चों को तुलसी का रस पिलाया जाए तो उनके दाँत सरलता से निकलते हैं और दाँत निकलते समय उन्हें कोई कष्ट नहीं होता।
- तुलसी की मंजरियाँ और बचपीपर पाँच-पाँच ग्राम तथा मिसरी २० ग्राम लेकर ५०० ग्राम पान में उबालें। आधा पानी जल जाने पर उसे छान लें और प्रतिदिन एक-एक चम्मच दिन में चार-पाँच बार देने से सूखी खाँसी मिट जाती है।
- छोटे बच्चों की खाँसी में तुलसी की पत्तियाँ पाँच ग्राम और काकराशिंगी तथा अतिविष-कली पाँच-पाँच ग्राम लेकर शहद के साथ मिलाकर माता के स्तन्य (दूध) के साथ पिलाने से लाभ होता है।
- तुलसी का रस और मुलेठी का रस दोनों को मिलाकर चटाने से खाँसी मिट जाती है।
- तुलसी और कासोंदरा के पत्तों का रस मिलाकर पिलाने से खाँसी मिट जाती है।
- १० ग्राम तुलसीपत्र, १० ग्राम मेथी और ५ ग्राम कुटकी सभी को ५० ग्राम पानी

वर्दी

– **समीर पारेख,** *संपादक 'हृदय परिवर्तन'* (विद्याविहार)

जब भी उनकी याद आती है उनकी वर्दी पहन लेती हूं-हर किसी को पढ़नी चाहिए मेजर की विधवा की ये कहानी...

New Delhi : साल २०१६ में जम्मू-कश्मीर के नगरोटा में हुए आतंकी हमले में भारत के ७ जवान शहीद हुए थे। इन्हीं में से एक थे, मेजर अक्षय गिरीश कुमार। अब उनकी पत्नी का खत सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। मेजर गिरीश की पत्नी संगीता रवींद्रन कहती हैं कि २००९ में उन्होंने मुझे प्रपोज़ किया था। २०११ में हमारी शादी हुई, मैं पुणे आ गयी। दो साल बाद नैना का जन्म हुआ। उसे लम्बे समय तक काम के सिलसिले में बाहर रहना पड़ता था। हमारी बच्ची छोटी थी, इसलिए हमारे परिवारों ने कहा कि मैं बेंगलुरु आ जाऊं।

मैंने फिर भी वहीं रहना चुना जहां अक्षय था। मैं हमारी उस छोटी सी दुनिया से दूर नहीं जाना चाहती थी, जो हमने मिल कर बनायी थी। उसके साथ ज़िंदगी हंसती-खेलती थी। उससे मिलने नैना को लेकर २०११ फ़ीट पर जाना, स्काईडाइविंग करना, हमने सबकुछ किया। २०१६ में उन्हें नगरोटा भेजा गया। हमें अभी वहां घर नहीं मिला था, इसलिए हम ऑफ़िसर्स मेस में रह रहे थे। २९ नवम्बर की सुबह ५:३० बजे अचानक गोलियों की आवाज़ से हमारी आंख खुली।

हमें लगा कि ट्रेनिंग चल रही है, तभी ग्रेनेड की आवाज़ भी आने लगी। ५:४५ पर अक्षय के एक जूनियर ने आकर बताया कि आतंकियों ने तोपखाने की रेजिमेंट को बंधक बना लिया है। उनके मुझसे आखिरी शब्द थे तुम्हें इसके बारे में लिखना चाहिए। सभी बच्चों और महिलाओं को एक कमरे में रखा गया था। संतरियों को कमरे के बाहर तैनात किया गया था, हमें लगातार फ़ायरिंग की आवाज़ आ रही थी। मैंने अपनी सास और ननद से इस बीच बात की। ८:०९ पर उसने ग्रुप चैट में मेसेज किया कि वो लड़ाई में है। ८:३० बजे सबको

सुरक्षित जगह ले जाया गया। अभी भी हम सब पजामों और चप्पलों में ही थे । दिन चढ़ता रहा, लेकिन कोई ख़बर नहीं आ रही थी। मेरा दिल बैठा जा रहा था। मुझसे रहा नहीं गया, मैंने ११:३० बजे उसे फ़ोन किया। किसी और ने फ़ोन उठा कर कहा कि मेजर अक्षय को दूसरी लोकेशन पर भेजा गया है।

लगभग शाम ६:१५ बजे कुछ अफ़सर मुझसे मिलने आये और कहा, मैम हमने अक्षय को खो दिया है, सुबह ८:३० बजे वो शहीद हो गए। मेरी दुनिया वहीं थम गयी। जाने क्या-क्या ख़याल मेरे मन में आते रहे। कभी लगता कि काश मैंने उसे कोई मेसेज कर दिया होता, काश जाने से पहले एक बार उसे गले लगा लिया होता, काश एक आख़िरी बार उससे कहा होता कि मैं उससे प्यार करती हूं। चीज़ें वैसी नहीं होतीं, जैसा हमने सोचा होता है। मैं बच्चों की तरह बिलखती रही, जैसे मेरी आत्मा के किसी ने टुकड़े कर दिए हों। दो और सिपाही भी उस दिन शहीद हो गए थे। मुझे उनकी वर्दी और कपड़े मिले। एक ट्रक में वो सब था जो इन सालों में हमने जोड़ा था। लाख नाकाम कोशिशें कीं अपने आंसुओं को रोकने की। आज तक उसकी वर्दी मैंने धोयी नहीं है। जब उनकी बहुत याद आती है, तो उनकी जैकेट पहन लेती हूं। उसमें उसे महसूस कर पाती हूं।

शुरू में नैना को समझाना मुश्किल था कि उसके पापा को क्या हो गया। लेकिन फिर उससे कह दिया कि अब उसके पापा आसमान में एक तारा बन गए हैं। आज हमारी जमायी चीज़ों से ही मैंने एक दुनिया बना ली है, जहां वो जीता है, मेरी यादों में, हमारी तस्वीरों में । आंखों में आंसू हों, फिर भी मुस्कुराती हूं। जानती हूं कि वो होता तो मुझे मुस्कुराते हुए ही देखना चाहता। कहते हैं न, अगर आपने अपनी आत्मा को चीर देने का दर्द नहीं सहा, तो क्या प्यार किया। दर्द तो बहुत होता है पर हां, मैं उससे हमेशा इसी तरह प्यार करूंगी। शहीदों के परिवारों को वो सब सहना पड़ता है, जिसके बारे में सोच कर भी शायद आप कांप उठेंगे। उनके अपने क़ुर्बान हो जाते हैं हमारी रक्षा करते-करते। हम सलाम करते हैं इन लोगों को जो ये सब सहते हैं, ताकि हम सुरक्षित रह सकें। ■

सब कुछ आपके अंदर ही है

प्रस्तुति – चंद्रप्रभा पटेल *(मुलुंड)*

एक आदमी बहुत बड़े संत-महात्मा के पास गया और बोला, 'हे मुनिवर! मैं राह भटक गया हूँ, कृपया मुझे बताएँ कि सच्चाई, ईमानदारी, पवित्रता क्या है?' संत ने एक नज़र आदमी को देखा, फिर कहा, अभी मेरा साधना करने का समय हो गया है। सामने उस तालाब में एक मछली है, उसी से तुम यह सवाल पूछो, वह तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे देगी। वह आदमी तालाब के पास गया। वहाँ उसे वह मछली दिखाई दी, मछली आराम कर रही थी। जैसे ही मछली ने अपनी आँख खोली तो उस आदमी ने अपना सवाल पूछा। मछली बोली, मैं तुम्हारे सवाल का जवाब अवश्य दूँगी किन्तु मैं सोकर उठी हूँ, इसलिए मुझे प्यास लगी है। कृपया पीने के लिए एक लौटा जल लेकर आओ। वह आदमी बोला, 'कमाल है! तुम तो जल में ही रहती हो फिर भी प्यासी हो?' मछली ने कहा, तुमने सही कहा। यही तुम्हारे सवाल का जवाब भी है। सच्चाई, ईमानदारी, पवित्रता तुम्हारे अंदर ही है। तुम उसे यहाँ-वहाँ खोजते फिरोगे तो वह सब नही मिलेगी, अतः स्वयं को पहचानो। उस आदमी को अपने सवाल का जवाब मिल गया।

सुख-शांति, ईमानदारी, पवित्रता व सच्चाई इत्यादि की खोज में मानव कहाँ-कहाँ नही भटकता...क्या..क्या जतन नही करता, फिर भी उसे निराशा ही हाथ लगती है। वह नही जानता, जिसकी खोज में वह भटक रहा है, वह तो उसके भीतर ही मौजूद है। उसकी स्थिति पानी में रहकर 'मीन प्यासी' जैसी हो जाती है।

सुख का अर्थ केवल कुछ पा लेना नहीं अपितु जो है उसमे संतोष कर लेना भी है। जीवन में सुख तब नहीं आता जब हम ज्यादा पा लेते हैं बल्कि तब भी आता है जब ज्यादा पाने का भाव हमारे भीतर से चला जाता है। सोने के महल में भी आदमी दुखी हो सकता है यदि पाने की इच्छा समाप्त नहीं हुई हो और झोपड़ी में भी आदमी परम सुखी हो सकता है यदि ज्यादा पाने की लालसा मिट गई हो तो। असंतोषी को तो कितना भी मिल जाये वह हमेशा अतृप्त ही रहेगा।

सुख बाहर की नहीं, भीतर की संपदा है। यह संपदा धन से नहीं धैर्य से प्राप्त होती है। हमारा सुख इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हम कितने धनवान है अपितु इस बात पर निर्भर करता है कि है कि कितने धैर्यवान हैं। सुख और प्रसन्नता आपकी सोच पर निर्भर करती है। ■

दृढ निश्चय और देश प्रेम

प्रस्तुति – दशरथ उपाडे (बाबु)

एक बार भारत के राष्ट्रपति ने जनरल बक्शी को अपने निवास पर रात्रिभोज पर आमंत्रित किया। जनरल बक्शी अपनी देशभक्ति और निडरता के लिए जाने जाते थे। जब वह राष्ट्रपति भवन पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वहां एक विदेशी मेहमान भी मौजूद है जो भारत के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी कर रहा है।

जनरल बक्शी ने इस बात को बर्दाश्त नहीं किया। वह उस विदेशी मेहमान के पास गए और उसे सीधे तौर पर कहा, आप हमारे देश का अपमान कर रहे हैं और हम इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। विदेशी मेहमान ने उनकी बात को अनसुना कर दिया।

जनरल बक्शी ने तुरंत ही उस मेहमान को एक सबक सिखाने का फैसला किया। उन्होंने राष्ट्रपति के सामने ही उस मेहमान का हाथ पकड़कर उसे दरवाजे से बाहर निकाल दिया। इस घटना से सभी लोग हैरान रह गए।

राष्ट्रपति ने जनरल बक्शी को इस हरकत के लिए डांटा, लेकिन जनरल बक्शी ने कहा, यह मेरा देश है और मैं इसका अपमान कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता, चाहे कोई भी मेहमान हो।

इस घटना के बाद, राष्ट्रपति को भी जनरल बक्शी की देशभक्ति और निडरता पर गर्व महसूस हुआ और उन्होंने उनकी प्रशंसा की। यह किस्सा जनरल बक्शी के दृढ निश्चय और देश के प्रति उनके गहरे प्रेम को दर्शाता है। ■

हास्य का हसगुल्ला

प्रस्तुति : हेमु मोदी *(सुरत)*

❒ पति : ये क्या वाहियात शोपिंग करती रहती हो।। इतनी घटिया चीजे कैसे पसंद आती है तुमको ?

पत्नी: ओ हेलो ! आपको भी मैंने ही पसंद किया है ।

❒ एक डॉक्टर शायरी के मूड में था, अब देखिये उसने दवाईयां कैसे लिखी, कैसे समझाया अपने मरीज को।

दिल बहला के मोहब्बत को न धमाल करें,
सीरप को अच्छी तरह हिला के इस्तेमाल करें।।
दिल मेरा टूट गया उठी जब उसकी डोली,
सुबह, दोपहर, शाम बस एक - एक गोली ।।
लौट आओ कि मोहब्बत का सुरूर चखे,
तमाम दवाईयां बच्चों की पहुंच से दूर रखें ।।

❒ लड़की वाले- हमें ऐसा लड़का चाहिए, जो कुछ खाता पीता ना हो, और कुछ गलत काम ना करता हो।

पंडित- ऐसा लड़का तो आपको ICU के इमरजेंसी वार्ड में ही मिलेगा।

❒ गधा : मेरा मालिक मुझे बहुत पीटता है ।

कुत्ता : तुम भाग क्यों नहीं जाते ?

गधा : मालिक की खूबसूरत लड़की जब पढ़ाई नही करती तो मालिक बोलता है कि तेरी शादी गधे से कर दूंगा, बस यही उम्मीद से टिका हूं । ■

प्रकाशन कॉ-ऑर्डिनेटर : समीर पारेख, *क्रिएटिव पेज सेटर्स,* घाटकोपर

तस्वीर बोल रही हैं मोबाइल एम्बुलेंस की

यह मोबाइल एम्बुलेंस
उन अनाथ माता-पिता
को, जो सड़कों पर
थके-हारे, बदबूदार
और बीमार पड़े होते हैं,
उसे अस्पताल ले
जाती हैं और
फिर उन्हें वृद्धाश्रम में
पहुंचा देती हैं।

तस्वीर बोल रही हैं अनुकंपादान की

जब सुनने की क्षमता
कम हो जाती है,
तो व्यक्ति अकेलापन
महसूस करने लगता है।
जीवन ज्योत
इस दुःख में
सहारा बनता है।

RNI. MAHHIN/2012/45662 Post Reg. MCE/141/2024-26.
Licence to Post Without Prepayment No. MR/TECH/WPP-208/EAST/2024-26.
Posted at Mumbai Patrika Channel Sorting Office, Mumbai- 400 001
Published and Posting on 15th of every month.

To,

तस्वीर बोल रही हैं 'कफन-दफन' कार्य की

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट के
इस नेक कार्य के तहत, पिछले 43 वर्षों में 350 से अधिक
लावारिस कैंसर पीड़ित शवों का अंतिम संस्कार ट्रस्ट द्वारा हुआ है।

Printed, Published, Edited & Owned by - **Mr. H. K. Savla,** Published from **Jeevan Jyot Cancer Relief & Care Trust,** 3/9, Kondaji Chawl, Jerbai Wadia Road, Near Tata Hospital, Parel, Mumbai - 400 012. & Printed at **P. H. Printer,** 18-P, D. L. Jain Compound, Opp. Voltas Ltd., 64, Dr. B. A. Road, Chinchpokli (E), Mumbai 400 012 ***Editor*** : **H. K. Savla**